
UNIT-4 अभियोग्यता, अभिवृत्ति एवं रुचि

संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 अभियोग्यता

1.3.1 अभिक्षमता की परिभाषा तथा अर्थ

1.3.2 अभिक्षमता की प्रकृति

1.3.3 अभिक्षमता का मापन

1.3.4 अभिक्षमता शिक्षा में उपयोग

1.4 अभिवृत्ति

1.4.1 अभिवृत्ति की परिभाषा तथा अर्थ

1.4.2 अभिवृत्ति की प्रकृति

1.4.3 अभिवृत्ति मापन

1.4.4 विभिन्न अभिवृत्ति अनुदेशानात्मक रणनीति

1.4.5 अभिवृत्ति शिक्षा में उपयोग

1.5 रुचि

1.5.1 रुचि की परिभाषा एवं अर्थ

1.5.2 रुचि की प्रकृति

1.5.3 रुचि मापन की प्रविधि

1.5.4 विभिन्न रुचि तथा अभियोग्यता- अनुदेशन

1.5.5 रुचि का शिक्षा में उपयोग

1.6 सारांश

1.7 अपनी प्रगति जाँचियें

1.1 प्रस्तावना

पिछले अध्याय में हमने सृजनात्मकता के विषय में अध्ययन किया। सृजनात्मकता वह योग्यता है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विदवत्तापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने तथा विचार करने में समर्थ बनाती है। सृजनात्मकता व्यक्ति की एक योग्यता है। सृजनात्मक व्यक्ति में कुछ गुण पाये जाते हैं, जैसे जिज्ञासू वृत्ति, मौलिकता, उदारता, इत्यादी व्यक्ति में कुछ ऐसी प्रतिभा, योग्यता या क्षतता दृष्टिगोचर होती है जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में सफलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। ऐसी प्रतिभा योग्यता जन्मजात होती है। तथा मनोविज्ञान की भाषा में इसे अभिक्षमता (Apptitude) कहा जाता है। शैक्षिक, व्यावसायिक तथा मनोवैज्ञानिक परामर्श व मार्गदर्शन के कार्य में अभिक्षमताओं तथा मनोवैज्ञानिक परामर्श व मार्गदर्शन के कार्य में अभिक्षमताओं के ज्ञान का विशेष महत्व होता है, सृजनात्मकता की समान ही विभिन्न व्यक्तियों में अभिक्षमताओं में विभिन्नता पायी जाती है। किन्हीं दो व्यक्तियों की अभियोग्यता में अंतर होना स्वाभाविक है।

व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष उसकी अभिवृत्तिया है। अभिवृत्ति वास्तव में एक मनोसामाजिक प्रत्यय है जो विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के द्वारा किये जाने वाले व्यवहार की प्रवृत्ति को बनाता है। अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व की वे प्रवृत्तियाँ हैं, जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति आदी के संबंध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। अभिवृत्तियों का निर्णय व्यक्ति के द्वारा विगत में विभिन्न परिस्थितियों अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के फलस्वरूप होता है।

अभिक्षमता, अभिवृत्ति के साथ-साथ अभिरुचि व्यक्ति के व्यक्तित्व की एक महत्वपूर्ण विभा है रंग रूप शारीरिक गठन, मानसिक गठन

मानसिक योग्यता स्वभाव, आचार-विचार अभिवृत्ति बुद्धि आदि की तरह रुचियों में भी व्यक्तिगत भिन्नताएं पायी जाती है। विभिन्न विषयों प्रकरणों व्यक्तियों वस्तुओं क्रियाओं व्यवसायों आदि का प्रति व्यक्ति की रुचियाँ भिन्न-भिन्न होती है, रुचि का व्यक्ति के योग्यताओं से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता परंतु जिन कार्यों में व्यक्ति की रुचि होती है। वह उसमें अधिक सफलता प्राप्त करता है। रुचियाँ जन्मजात भी हो सकती तथा अर्जित भी हो सकती है।

प्रस्तुत अध्याय में हम अभिक्षमता, अभिवृत्ति तथा रुचि का अध्ययन करेंगे।

1.2 उद्देश्य-

प्रस्तुत इकाई को पढ़ने के बाद आप-

- अभियोग्यता, अभिवृत्ति तथा रुचि के प्रत्यय को समझ सकेंगे।
- अभियोग्यता, अभिवृत्ति तथा रुचि में अंतर कर सकेंगे।
- अभियोग्यता अभिवृत्ति तथा रुचि परीक्षण के संबंध में जानेंगे।
- विभिन्न प्रकार की अभियोग्यता रुचि, अभिवृत्ति वाले छात्रों को प्रबंधन करेंगे।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में तीनों प्रत्ययों का उपयोग कर सकेंगे।

1.3 अभिक्षमता

दैनिक जीवन में हम छात्रों के संबंध में यह देखते हैं कि उसे किसी विशिष्ट कार्य में रुचि है, हर बच्चों की हर छात्र की रुचियाँ भिन्न-भिन्न होती है, किसी बच्चे संबंध में हम कह सकते हैं कि इस

बच्चे का बड़ा होकर डॉक्टर बनना चाहिए अथवा यह लड़की बड़ी होकर जरूर एक शिक्षिका बन सकती है।

इस प्रकार के कथनों का तात्पर्य यह होता है कि उस बालक या छात्र में विशिष्ट प्रतिभा या योग्यता होती है जो उसके व्यवहार से दृष्टिगोचर होती है तथा किसी विशिष्ट क्षेत्र में सफलता प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इस तरह की योग्यता जन्मजात होती है तथा व्यक्ति के कार्यों द्वारा प्रकट होती है तथा मनोविज्ञान की भाषा में इसे अभिक्षमता (Apptitude) कहते हैं।

शैक्षिक एवं व्यावसायिक परामर्श हेतु अभिक्षमता का मापन किया जाता है जिसके आधार पर हम यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि छात्र किस छात्र विशेष में सफलता अर्जित कर सकता है? जिस क्षेत्र में अभिक्षमता नहीं है उस क्षेत्र में प्रयत्न करना धन-समय को नष्ट करना है। किसी को रोजगार प्रदान करते समय भी अभिक्षमता का ध्यान रखना आवश्यक है।

1.3.1 अभिक्षमता की परिभाषा तथा अर्थ:-

फ्रिमन के शब्दों में:- “अभिक्षमता ऐसी विशेषताओं के समूह का द्योतक है, जो (प्रशिक्षण के उपरान्त) किसी विशिष्ट ज्ञान, कौशल या संगठित प्रतिक्रियाओं के समुच्चय को अर्जित करने की व्यक्ति की योग्यता की सूचक होती है, जैसे भाषा बोलने, संगीतकार बनने, यांत्रिक कार्य करने की योग्यता”

“An aptitude is a Combination of characteristics indicative of an individual's capacity to acquire (with training) some specific knowledge, skill or set of organized responses, such as ability to speak a language, to become a musician, to do mechanical work”

- Freeman

ट्रेक्सलर के अनुसार- “अभिक्षमता व्यक्ति में विद्यमान कोई दशा, गुण अथवा गुणों का समुच्चय है जो किसी ज्ञान, बोध, कौशल के समूहन की उस सीमा का द्योतक है जिसे वह व्यक्ति उपयुक्त प्रशिक्षण में प्राप्त करने योग्य हो सकेगा।”

“Aptitude is a condition, a quality or set of qualities in a individual which is indicate of the probable extent to which he will be able to acquire linder suitable training, some knowledge, understanding or skill or composite of knowledge understanding and skill”.

- Traxler

1.3.2 अभिक्षमता की प्रकृति

अभिक्षमता से हम व्यक्ति के रुचि योग्यता, रुझान के संबंध में जान सकते हैं:

- अभिक्षमता मूर्त या वस्तु नहीं है अपितु यह एक अमूर्त संज्ञा है जो एक गुण को व्यक्त करती है। जो व्यक्ति के व्यवहार से दृष्टिगत होती है।
- अभिक्षमता व्यक्ति के गुण को व्यक्त करती हैं
- अभिक्षमता व्यक्ति के किसी कार्य करने की योग्यता को व्यक्त करती हैं।
- अभिक्षमता पर योग्यता, रुचि का गहरा प्रभाव पड़ता है।
- अभिक्षमता से व्यक्ति के वर्तमान की योग्यता के आधार पर भविष्यवाणी करती है।

1.3.3 अभिक्षमता का मापन (Measurment of Aptitude)

अभिक्षमता परीक्षण वह होता है जिसकी रचना किसी विशेष प्रकार की तथा सीमित क्षेत्र की क्रिया करने की बीजभूत योग्यता को मापने के लिए की जाती है, अभिक्षमता मापन हेतु अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। प्रकृति के आधार पर अभिक्षमता परीक्षण तीन प्रकार के होते हैं।

(i) सामान्य अभिक्षमता परीक्षण (General Aptitude Test)

सामान्य कार्यक्षमता का मापन करने हेतु सामान्य अभिक्षमता परीक्षण का उपयोग किया जाता है। यह परीक्षण व्यक्ति की सामान्य बुद्धि, (General Intelligence) मानसिक योग्यता (Mental Ability) को मापन करते हैं। सामान्य बुद्धि द्वारा उपलब्धि या विद्यालयी सफलता, का सफलतापूर्वक कथन किया जा सकता है। कुछ विद्वान इन्हें शैक्षणिक अभिक्षमता परीक्षण भी कहते हैं।

(ii) भेदक अभिक्षमता परीक्षण (Differntial Aptitude)

भेदक अभिक्षमता परीक्षण (Differntial Aptitude) इसमें शृंखला प्रकार के परीक्षण होते हैं। या अनेक परीक्षण का समूह या शृंखला होती है। अथवा इस प्रकार के परीक्षणों में अनेक उपपरीक्षण होते हैं। ये विभिन्न परीक्षण या उपपरीक्षण व्यक्ति को भिन्न क्षेत्रों की अभिक्षमताओं को इंगित करते हैं तथा जिन पर व्यक्ति के द्वारा प्राप्त अंकों को तुलनात्मक विवेचन करके व्यक्ति की अभिक्षमता क्षेत्रों (Areas) को ज्ञात कर लिया जाता है।

इन परीक्षण की संरचना के अंतर्गत शब्दबोध, आंकिक बोध, स्थानगत बोध, यांत्रिक बोध लिपिकीय क्षमता, स्वभावगत झुकाव (Behavioural tendencies) आदि से संबंधित उपपरीक्षण होते हैं।

बैनेट (Bannet) सीशोर (Seashore) तथा बेजमेन (Wesman) के द्वारा तैयार किया गया विभेदक अभिक्षमता परीक्षण (Differential Aptitude Test) बहुतायात से प्रयुक्त किया जाने वाला परीक्षण है। कक्षा 8 से 12 तक के लिए है तथा इसके दो प्रारूप (Form-S and Form-T) उपलब्ध हैं। प्रत्येक प्रारूप में आठ-आठ उपपरीक्षण हैं एक परीक्षण पुस्तिका में (i) शाब्दिक तर्क (VR Verbal reasoning) (ii) आंकिक योग्यता (Numerical Ability) (iii) अमूर्त तर्क (Abstract Reasoning) या AR तथा लिपिकीय गति तथा परिशुद्धता (Clerical Speed and Accuracy) या CSA नामक चार उपपरीक्षण होते हैं। जिनके लिये क्रमशः 30, 30, 25 व 6 मिनट (कुल 91 मिनट) का समय निर्धारित करता है। दूसरी परीक्षण पुस्तिका में यांत्रिक तर्क (Mechanical Reasoning) या तथा भाषा प्रयोग (Language Use LV) नामक चार उपपरीक्षण होते हैं जिनके लिए क्रमशः 30, 25, 10 और 25 मिनट कुल 90 मिनट का समय होता है।

आठों परीक्षण पर अलग-अलग प्राप्तांक होते हैं। उपरोक्त परीक्षण में लिपिकीय परीक्षण गति परीक्षण है तथा बाकी शक्ति परीक्षण है।

(ii) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण (Special Aptitude)

विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण (Special Aptitude) इस प्रकार के अभिक्षमता परीक्षण वे परीक्षण हैं जो किसी विशिष्ट क्षेत्र में अभिक्षमता का मापन करने के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं, जैसे अभिक्षमता का मापन करने के लिए संगीत अभिक्षमता परीक्षण, चिकित्सीय अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग किया जाता है।

विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण के उदाहरण निम्नवत हैं-

- (1) होर्न कला अभिक्षमता (Horn Art Aptitude Inventors)
- (2) पियर कला परीक्षण (Meier Art Test)
- (3) संगीत अभिक्षमता प्रोफाइल (Musical Aptitude Profile)
- (4) शाशोर का संगीत प्रतिभा परीक्षण (Seashore Measures Of Musical Talent)
- (5) विंग का संगीत बुद्धि प्रमापीकृत परीक्षण (Wings Standardized Of Musical Intelligence)
- (6) मिनीसोटा लिपिकीय परीक्षण (Minnesota Clerical Test)
- (7) चिकित्सा महाविद्यालय प्रवेश परीक्षण (Medical College Admission Test)
- (8) पूर्व-अभियांत्रिकी योग्यता परीक्षण (Pre-Engineering Ability Test)

उदाहरण:-

संगीतात्मक अभिरुचि परीक्षाएं (Musical Aptitude Test) संगीतात्मक प्रतिभा की खोज के लिए इन परीक्षाओं का निर्माण किया गया है एक संगीतात्मक अभिरुचि परीक्षा का उदाहरण निम्नलिखित है। इसमें निम्नलिखित संगीतात्मक योग्यताओं की ओर ध्यान दिया जाता है।

- (a) स्वर की तीव्रता (Pitch) का भेद करना।
- (b) स्वर के भारीपन (Intensity of Loudness) में भेद करना।
- (c) समय अंतराल (Time Interval) का निश्चय करना।
- (d) स्वर कंपन
- (इ) लय का निर्णय करना।
- (फ) स्वरात्मक प्रकृति

इस बैटरी की ये पंक्तियों फोनोग्राफ रिकार्डों पर प्रस्तुत की गई हैं परीक्षार्थी इनको सुनता है और इनमें भेद करने का प्रयत्न करता है उसे परीक्षक द्वारा दिये गये निश्चित फार्म पर उत्तर देने होते हैं। इन परीक्षाओं में दिये गये आदेश निम्नलिखित प्रकृति के होते हैं।

“आप ध्वनियाँ सुनेंगे जो ध्वनि की तीव्रता की दृष्टि से भिन्न होगी आपको निर्णय करना होगा कि दूसरी ध्वनि की अपेक्षा अधिक तीव्र है या कम यदि वह अधिक है तो ‘एच’ लिखिए और यदि कम है तो ‘एल’ लिखिए।

अभियोग्यता परीक्षणों की सहायता से विभिन्न पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु प्रशिक्षणार्थियों को चुनाव में बहुत सहायता मिलती है। अभिक्षमता परीक्षण में उचित स्थान पर उचित व्यक्ति का चुनाव किया जा सकता है।

1.3.4 अभिक्षमता-शिक्षा में उपयोग

अभिक्षमता परीक्षण का क्षेत्र बृहद है, निर्देशन तथा परामर्श सेवा में इसका उपयोग बहुतायात से होता है। अभिक्षमता परीक्षण द्वारा छात्र भविष्य में किस क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकता है इसका अनुमान परीक्षण लगाना संभव होता है। इसलिए अभिक्षमता परीक्षण लगाना संभव होता है। इसलिए अभिक्षमता परीक्षण किशोर छात्रों को अपने विषय अथवा व्यवसाय चयन हेतु मार्गदर्शन देने के हेतु उपयोगी है।

शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में चयन के लिए अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग किया जाता है। विभिन्न व्यावसायिक तथा शैक्षिक अभ्यासक्रमों में छात्रों का चयन अभिक्षमता परीक्षण के आधार पर किया जाता है।

इस तरह अभिक्षमता व्यक्ति वर्ग क्षमताओं के संबंध में पूर्वानुमान लगता है इस तरह से विशिष्ट शैक्षिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम, अथवा

विशिष्ट कार्य हेतु योग्य उम्मीदवार का चयन सभी को अभियोग्यता परीक्षण को महत्व देना आवश्यक हैं।

किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व, रुचि, बुद्धि संचयी अभिलेखों के साथ-साथ अभियोग्यता परीक्षण की सहायता से (संसाधनों के अपव्यय को रोक सकते हैं।) व्यक्ति का जहाँ वे सबसे अधिक नियोजन कर के मानव तथा सामाग्री संसाधन के अपव्यय को रोका जा सकता है।

1.4 अभिवृत्ति

पिछले बिंदू में हमने देखा की व्यक्ति की अभिक्षमता की अभिक्षमता का कारण अभिरुचि भी है। व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। यह एक मनो-सामाजिक प्रत्यय है। हम विभिन्न परिस्थितियों में जैसा का व्यवहार करते हैं उसकी प्रवृत्ति अभिवृत्ति द्वारा जैसा निश्चित होती है।

अभिवृत्तियों के ज्ञान की सहायता से व्यक्ति के व्यवहार का पूर्व आकलन व विश्लेषण करना संभव होता है। मनोविज्ञानर, समाजशास्त्र शिक्षाशास्त्र जैसे सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन में अभिवृत्तियों को एक महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है।

1.4.1 अभिवृत्ति की परिभाषा तथा अर्थ

अभिवृत्ति अपने मनोभावों तथा विश्वासों को इंगित करती है। इससे ज्ञात होता है कि व्यक्ति तथा क्या सोच रहा है। अथवा उसका पूर्व विश्वास क्या है ?

थर्सटन के अनुसार “अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से संबंधित धनात्मक-अथवा ऋणात्मक भाव है”

“An attitude is the degree of positive or negative feeling associated with some psychological object”.

- Thurstone

गुड के अनुसार “अभिवृत्ति किसी परिस्थिति, व्यक्ति या वस्तु के प्रति किसी विशेष ढंग से, किसी विशेष सघनता से प्रतिक्रिया करने की तत्परता है।”

“Attitude is a readiness to react towards or against some situation, person or think or a particular manner, to a particular degree of intencity”.

- C.V. Good

फ़िमेन के शब्दों में “अभिवृत्ति किन्हीं परिस्थितियों, व्यक्तियों या वस्तुओं के प्रति संगत ढंग से प्रतिक्रिया करने के स्वाभाविक तत्परता है; जिसे सीख लिया गया है तथा जो व्यक्ति के द्वारा प्रतिक्रिया करने का विशिष्ट ढंग से बन गया है”

“An attitude is a dis positional readiness to response to certain situations person object in a consistant manner, which has been learned and has become one’s typicial mode of response

- F.S. Freeman

उपरोक्त परिभाषा के आधार पर स्पष्ट है अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व की वे प्रवृत्तियाँ हैं जो उसे किसी वस्तु, व्यक्ति आदी के संबंध में किसी विशिष्ट प्रकार के व्यवहार को प्रदर्शित करने का निर्णय लेने के लिए प्रेरित करती है। अभिवृत्ति व्यक्ति के दैनिक जीवन अर्जित अनुभवों को सामान्यीकृत करने के फलस्वरूप निर्माण होता है।

1.4.2 अभिवृत्ति की प्रकृति-

अभिवृत्ति के निर्माण में व्यक्ति के व्यवहार के प्रत्यक्षात्मक संवेगात्मक, प्रेरणात्मक तथा क्रियात्मक पक्ष निहित रहते हैं।

- अभिवृत्ति धनात्मक अथवा ऋणात्मक भी हो सकती है। ,
- अभिवृत्ति परिस्थिति, योजना, व्यक्ति, वस्तु से संबंधित होता है।
- अभिवृत्तियों में समय-समय पर परिवर्तन हो सकता है।
- अभिवृत्तियों के विकास पर प्रत्यक्षीकरण तथा संवेगात्मक कारकों पर प्रभाव डालते हैं।
- अभिवृत्ति व्यक्तिगत होती है किसी एक ही घटना अथवा वस्तु के प्रति अलग अलग व्यक्तियों की अभिवृत्ति में अंतर होता है।
- अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार प्रभावित करती है। धनात्मक अभिवृत्ति व्यक्ति को सफलता दिलाती है।
- अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व के विभिन्न पक्षों से संबंध रखती है।
- अभिवृत्ति के निर्धारण में स्व का अधिक महत्व होता है।
- अभिवृत्ति संस्कृति पर निर्भर करती है।
- अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार का आधार होती है।

1.4.3 अभिवृत्ति मापन

अभिवृत्ति की प्रकृति आंतरिक होती है। अन्य मनोवैज्ञानिक प्रत्ययों के समान अभिवृत्ति को भी व्यवहार द्वारा ही जाना जा सकता है। अभिवृत्ति की प्रकृति आंतरिक होने के कारण इनका मापन करना सदैव ही कठिन समस्या रही है। समय-समय पर आवश्यकताओं के अनुरूप अभिवृत्तियों के मापन के विभिन्न प्रयास मनोमिलिकों द्वारा किये जाते हैं।

विगत साठ वर्षों में अभिवृत्ति मापन के क्षेत्र में काफी विकास हुआ है तथा आधुनिक समय में विभिन्न वस्तुओं, व्यक्तियों, परिस्थितियों आदि के प्रति अभिवृत्ति का मापन करने के लिए अनेक प्रकार के अभिवृत्ति मापन उपकरण उपलब्ध हैं। अभिवृत्ति के मापन तीन मुख्य विधियाँ हैं।

- (1) प्रत्यक्ष प्रश्न विधि (Direct question method)
- (2) प्रत्यक्ष अवलोकन (Method of direct Observation)
- (3) स्केलिंग (मापनी विधि) (Scaling method)

इनमें से प्रथम दो विधियों में अभिवृत्ति का मापन व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के व्यवहार के माध्यम से करते हैं। इसलिए इन विधियों का व्यावहारिक विधि या प्रत्यक्ष विधि भी कहते हैं। दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि व्यक्ति के व्यवहार का अवलोकन करके अथवा व्यक्ति से प्रश्न पूछकर उसकी अभिवृत्ति का मापन कर सकते हैं।

अभिवृत्ति मापन, मापन की स्केलिंग विधि मनोवैज्ञानिकों को अप्रत्यक्ष विधि भी कहते हैं। इस विधि के अंतर्गत मनोवैज्ञानिक सातत्य (Psychological Continuum) व्यक्ति की स्थिति को परिमापन करके उसकी अभिवृत्ति का मापन किया जाता है।

परिमापित कथन विधि- उदाहरण - छात्रों को उनकी पसंद के अनुसार विषय का चयन करना चाहिए। - हाँ/नहीं

परिमापित प्रतिक्रिया अभिवृत्ति

महिलायें अपने प्रति होने वाले अपराधों की प्रति सचेत नहीं होती।

पूर्णता	सहमत	कुछ-कुछ सहमत	अनिश्चित	कुछ असहमत	पूर्णतः असहमत
---------	------	--------------	----------	-----------	---------------

परिमाणन विधियों का विभिन्न मनोवैज्ञानिक व मनोमिलिकों ने भिन्न प्रकार से विवेचन व उपयोग करके अभिवृत्ति मापनियों की रचना की है। यस्टन वर्चव की समृद्धि अंतराल विधि (Equal-Appearing Intervals Methods of Thurston) तथा सफीर (Safeer) की क्रमबद्ध अंतराल विधि (Successive Interval Methods) प्रमुख है।

1. प्रत्यक्ष प्रश्न विधि (Method of Direct Questioning)

इस विधि के अंतर्गत व्यक्ति से प्रश्न पूछ जाते हैं। पूछे जाने वाले प्रश्न किसी वस्तु, व्यक्ति, परिभाषिति से संबंधित होने हैं। व्यक्ति द्वारा दिये गये उत्तरों से उसकी अभिवृत्ति को जान सकते हैं। व्यक्ति के विचार या अभिवृत्ति तीन प्रकार की हो सकती है। (1) अनुकूल अभिवृत्ति (2) प्रतिकूल अभिवृत्ति (3) अनिश्चित उदा. देश में चल रहे असहष्णुता के मुद्दे पर आपका क्या मत है? इस तरह का प्रश्न पूछा जाये तो साक्षात्कार कर्ता द्वारा प्रत्यक्ष प्रश्न विधि की सहायता से अभिवृत्ति जानने का प्रयास कियाजा रहा है तथा प्राप्त उत्तर के आधार पर उपरोक्त वर्णित तीन प्रकारों में अभिवृत्ति को रखा जायेगा, यदि व्यक्ति अहीष्णुता के प्रति सहमति प्रकट करता है जो वह अनुकूल अभिवृत्ति कहलायेगी, वही सहसहमति, प्रतिकूल अभिवृत्ति को दर्शाती हैं यदि व्यक्ति अपने विचार स्पष्ट रूप से नहीं व्यक्त कर सकता ऐसी स्थिति में अनिश्चित अभिवृत्ति। अभिवृत्ति मापन की प्रत्यक्ष प्रश्न विधि अत्यंत सरल है कोई भी आसानी से इसका प्रयोग कर सकता है परंतु कई फिरे भी इसकी कुछ सीमाएं हैं। जैसे व्यक्ति अपने विचारों भावों या अभिवृत्तियों को सार्वजनिक रूप से प्रकट करने में शिक्षक का अनुभव करते हैं। ऐसे में व्यक्ति की प्रदर्शित अभिवृत्ति तथा वास्तविक अभिवृत्ति में पर्याप्त अंतर हो सकता है।

2. प्रत्यक्ष अवलोकन विधि

इस विधि से व्यक्तियों के व्यवहार अवलोकन करके उसकी अभिवृत्ति का पता लगाया जाता है। इस विधि की मान्यता है कि व्यक्ति के द्वारा अपने दिनचर्या के दौरान किये जाने वाला व्यवहार के द्वारा किसी वस्तु व्यक्ति अथवा संस्था के प्रति उसकी अभिवृत्ति को ज्ञात किया जा सकता है। इस विधि में व्यक्ति की वास्तविक अभिवृत्ति का पता चलता है क्योंकि व्यक्ति को यह आभास नहीं होता कि उसका अवलोकन किया जा रहा है। इसलिए वह अपने वास्तविक व्यवहार को होकर करता है। उदाहरण कोई व्यक्ति दहेज लेता है यास उसके संबंध में सकारात्मक बातें करता, वस्तुओं की अपेक्षा करता है तो इससे अभिप्राय निकाला जा सकता है कि वह दहेज प्रथा के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति रखता है। यह विधि प्रश्न विधि से श्रेष्ठ है परंतु इसमें समयावधि ज्यादा है। हम इस विधि द्वारा किसी समूह की अभिवृत्ति ज्ञात नहीं कर सकते हैं।

3. परिमापन विधियाँ-

परिमापन विधियाँ मनोवैज्ञानिक सातत्य के आधार पर तैयार की जाती हैं। भौतिक चरों के मापन के लिए भौतिक सातत्य का प्रयोग किया जाता है। जो मौलिक गुणों को उसके मात्रा के आधार पर क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित कर देता है। जैसे भार-1 किलोग्राम, 1 किलोग्राम, 3 किलोग्राम इसी प्रकार वस्तुओं या व्यक्तियों को उनसे संबंधित प्रतिक्रियाओं या निर्णयों के आधार पर मनोवैज्ञानिक सातत्यों पर क्रमबद्ध किया जा सकता है। जिसमें मनोवैज्ञानिक गुण के लिए संभव सभी मानों की एक क्रमबद्ध व्यवस्था होती है।

परिमापन विधियाँ दो तरह की होती हैं-

- (1) कथन विधियाँ
- (2) प्रतिक्रिया विधियाँ

परिमाणन विधियों में अभिवृत्ति के मापन के लिए कुछ कथनों का प्रयोग किया जाता है। ये कथन जिसके प्रति अभिवृत्ति का मापन करना होता है। किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान के संबंध में कुछ बात व्यक्त करते हैं। व्यक्ति के उत्तरों के आधार पर अभिवृत्ति का मापन किया जाता है।

1.4.4 विभिन्न अभिवृत्ति-अनुदेशनात्मक रणनीति

Strategies to handle different

अभिवृत्ति सकारात्मक अथवा नकारात्मक तरीके से व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है।

कक्षा में शिक्षक के लिए विविध अभिवृत्ति वाले छात्रों में समन्वय स्थापित करना शिक्षक के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। कक्षा में सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले छात्र भी हो सकते हैं। जिनका सकारात्मक प्रभाव कक्षा वातावरण पर पड़ता है जो अपने आसपास के वातावरण को (Active) तथा (Productive) बना सकते हैं उसी तरह नकारात्मक विचारों वाले छात्र भी कक्षा में होते हैं जिनके व्यवहार से कार्य की प्रभावशीलता कम होती है वे अपने सहपाठियों (Demotiv etc) कर सकते हैं।

Set Classroom rules कक्षा के नियम निर्धारित करना

कक्षा में छात्रों को यह पता होना चाहिए कि उनका कौन सा व्यवहार कक्षा में स्वीकृत होगा तथा किस व्यवहार के लिए उन्हें दंड मिलेगा शिक्षक को चाहिए कि वह एक नियमावली बनाये तथा उसे भी इससे अवगत कराये, स्पष्ट निर्देश रखने पर शिक्षक को अनुशासनहीनता का सामना नहीं करना पड़ेगा।

(Adjust the learning environment)

सृजनात्मक क्रियाशील, छात्रों को बढ़ावा देने वाला कक्षा का वातावरण जिसे कई प्रकार की क्रियाओं (Activity) का समावेश होती है छात्रों को व्यस्त रखते है, बच्चें तथा किशोर बालक को आव्हान तथा विविधता अच्छी लगती है, इसलिए उनके लिए अधिगम की नयी विधियों का प्रयोग करना चाहिए, छात्रों के समूह बनाकर उन्हें कार्य देना चाहिए जिसमें उनके सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास हो, कुछ छात्रों को (Volunteer) स्वयंसेवक बनाना चाहिए जो और छात्रों की मदद करें।

Get to know each students talent

हर छात्र की प्रतिभा को जानिये

शिक्षकों की अपनी कक्षा के छात्रों के संबंध में जानकारी होनी चाहिए, छात्रों की रुचि, उनकी प्रतिभा उनकी क्षमता इत्यादि के संबंध में जानकारी होने पर शिक्षक अपनी कक्षा का प्रबंधन करना सरल होगा,

1.4.5 अभिवृत्ति शिक्षा में उपयोग

अभिवृत्ति व्यवहार को एक निश्चित दिशा प्रदान करने के लिए उत्तरदायी है अगर किसी को किसी वस्तु के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति है तो वह उस वस्तु के प्रति आकर्षित होगा, उसे पाने का प्रयत्न करेगा और अगर नकारात्मक अभिवृत्ति हुई तो वह उसे दूर भागेगा। इसलिए छात्रों तथा अन्य वांछनीय निर्माण करने का प्रयास करना चाहिए।

किसी भी वस्तु के प्रति बनी हुई धारणाओं, विश्वासों, आदर्शों और अभिप्रेरणाओं का संबंध अभिवृत्ति से होता है। कोई भी व्यक्ति किसी अभिवृत्ति के प्रभाव में आकर एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करता है अभिवृत्तियों के द्वारा के किसी वस्तु विचार के प्रति एक विशेष प्रकार की रुचि-अरुचि, पसंद-नापसंद पनप जाती है जिसकी बुनियाद कुछ हद तक तार्किक हो सकती है, साथ ही संवेगात्मक कारण जुड़े होते है, व्यक्ति में

यह बाते जन्मजात नहीं होती वातावरण ही इन्हें सीखता है। इसलिए स्कूल घर, परिवार में हमेशा यही कोशिश होनी चाहिए की बालकों में अनुकूल अभिवृत्ति विकसित हों।

अभिवृत्ति ऐसी प्रवृत्ति या शारीरिक-मानसिक अवस्था है जो व्यक्ति को एक एक परिस्थिति में एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने हेतु प्रेरित करती है। व्यक्ति की किसी विशेष उद्दीपक के प्रति किस प्रकार की प्रक्रिया होगी, यह उसके प्रति बनी अभिवृत्ति पर निर्भर करेगा, छात्रों में वांछनीय व्यवहार विकसित करने हेतु अभिवृत्ति उपयोगी साबित इस प्रकार अभिवृत्तियाँ बहुत कुछ सीमा तक किये जाने वाले व्यवहार के लिए उत्तरदायी ठहराई जा सकती है। परंतु व्यक्ति का व्यवहार संपूर्ण रूप से उसकी अभिवृत्तियों पर ही निर्भर होती है। यह कहना भी गलत होगा। इस तरह से अभिवृत्ति व्यवहार को दिशा प्रदान करने वाली अर्जित प्रवृत्ति है जो व्यक्ति को विशेष वस्तु या वस्तुओं के प्रति एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने को तत्पर करती है। शिक्षा में इसका उपयोग करके छात्रों के व्यवहार को उचित दिशा प्रदान कर सकते हैं।

1.5 रुचि (Interest)

हम अपने आसपास देखते हैं कि व्यक्ति अपनी अलग पसंद रखता है। कोई डॉक्टर बनना पसंद रखता है तो कोई इंजीनियर बनना चाहता है, किसी को विज्ञान पसंद है तो किसी को चित्रकला कार्य हमारे रुचि के अनुसार हो तो मनोयोग से किया जाता है। इसके विपरीत जिस कार्य में हमारी रुचि नहीं होती वह हमम न लगाकर नहीं कर पाते परिणामतः असफल होते हैं। इसी कारण से जब छात्रों को शैक्षिक अथवा व्यावसायिक

परामर्श एवं निद्रेशन प्रदान करते समय रुचियों परामर्श एवं निद्रेशन प्रदान करते समय रुचियों का भी ध्यान रखा जाता है।

साधारण शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि रुचि किसी वस्तु व्यक्ति, तथ्य प्रतिक्रिया आदि को पसंद करने तथा उसके प्रति आकर्षित होने की प्रवृत्ति है।

1.5.1 रुचि की परिभाषा एवं अर्थ

रुचि के अर्थ के संबंध में कुछ मनोवैज्ञानिक विचार निम्न प्रकार से है।

बिंधम के अनुसार “रुचि किसी अनुभव में संविलिन होने व इसमें संलग्न रहने की प्रवृत्ति है, जबकि विरक्ति उसके दूर जाने की प्रवृत्ति है।

“An interest is a tendency to become absorbed in an experiences & to continue it while an aversion is a tendency to turn away from it.

गिलफोर्ड के अनुसार शब्दों में “रुचि किसी क्रिया, वस्तु या व्यक्ति पर ध्यान देने उसके द्वारा आकर्षित होन, उसे पसंद करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति है।”

Interest is a tendency to give attention, to attract by, to like and find satisfaction in an activity, object or person.

रेमर्स, गेज व रुमेल के अनुसार “रुचियाँ वास्तव में सुखांत व बुखांत भावनाओं, पसंद या नापसंद के व्यवहार के प्रति आकर्षण व हानिकर्षण से परीलक्षित होती है।

Interest are presumably the reflection of attraction and aversion in behavior of felling of pleasantness & unpleasantness, likes or dislikes

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि किसी वस्तु व्यक्ति प्रक्रिया तथ्य कार्य आदि को पसंद करने अथवा उसके हानि आकर्षित होने उस पर ध्यान केन्द्रित करने तथा उससे संतुष्टि पाने की प्रवृत्ति को ही रुचि कहते हैं। रुचि का व्यक्ति की योज्यताओं से कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं होता है।

1.5.2 रुचि की प्रकृति

1. रुचियाँ व्यक्ति की पसंद को इंगित करती हैं।
2. रुचि अभिक्षमता का लाक्षणिक रूप होता है।
3. रुचियाँ जन्मजात भी होती हैं और अर्जित भी हो सकती हैं।
4. रुचि तथा ध्यान में गहरा संबंध होता है, जिस वस्तु या विषय में हमें रुचि होती है हम उसे ज्यादा ध्यान देते हैं।
5. अपनी रुचि के अनुसार कार्य करना हमेशा संतुष्टि प्रदान करता है। इससे व्यक्ति को अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के प्राप्ति में सहायता मिलती है।
6. रुचि का संबंध आवश्यकता, इच्छा तथा लक्ष्यों से होता है।
7. रुचियाँ परिवर्तनशील होती हैं। परिपक्वता, शिक्षा तथा अन्य आंतरिक तथा बाह्य तत्वों के कारण बदलती हैं।
8. रुचि से सीखने में आने वाली असामान्य रुकावटों को दूर करने में सहायता मिलती है। इससे व्यक्ति को थकावट का सामना करने और असफलता से बचने में सहायता मिलती है।
9. रुचि अभिप्रेरित करने का कार्य करती है ज्यों व्यक्ति को ज्ञानात्मक, क्रियात्मक या भावनात्मक व्यवहार की ओर अग्रसर करती है।

10. रुचि किसी भी वस्तु को व्यक्तिगत अर्थ प्रदान करती है किसी भी वस्तु में रुचि होने के कारण हम सभी वस्तुओं की उसी रुचि के दृष्टिकोण से व्याख्या करते हैं।

1.5.3 रुचि मापन की प्रविधियाँ

रुचियों का मापन करने हेतु निम्न प्रविधियों का प्रयोग किया जाता है जैसे

(अ) प्रश्नावली

प्रश्नावली रुचिमापन का लिखित माध्यम है। प्रश्नावली में प्रश्न लिखित अथवा मुद्रित रूप में होते हैं। प्रश्नावली एक साथ अनेक व्यक्तियों पर प्रशासित की जाती है। इसमें लिखकर या चिन्ह लगाकर अपने उत्तर देने होते हैं। प्रश्नावली की सहायता से हम शैक्षिक तथा व्यावसायिक क्षेत्र में रुचियों का मापन सरलता से कर सकते हैं।

(ब) अवलोकन-

जब रुचियों को अनौपचारिक ढंग से ज्ञात करना हो तब अवलोकन का उपयोग अत्यंत सुविधाजनक ढंग से किया जाता है। जैसे किसी शिक्षक को अपने छात्रों की रुचियाँ अवलोकन द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। अथवा माता पिता अपने बच्चों की रुचियाँ अवलोकन द्वारा ज्ञात कर सकते हैं। परन्तु अवलोकन से प्रदर्शित रुचियों का ही ज्ञान हो पाता है।

(स) साक्षात्कार-

साक्षात्कार में सीधे-सीधे प्रश्न पुछकर व्यक्ति की रुचियों को जाना जाता है। इस विधि में व्यक्ति अपनी रुचियों के संबंध में खुद बताता है। शैक्षिक तथा व्यावसायिक परामर्शदाता, रोजगार तथा प्रवेश के लिए

साक्षात्कार विधि का उपयोग करते हैं। साक्षात्कार द्वारा प्रदर्शित रुचियों की जानकारी मिल पाती है।

हम जानते हैं कि जिस कार्य में हम रुचि रखते हैं उसमें हम सफलता अर्जित करते हैं। विभिन्न विषयों में छात्रों की सफलता-असफलता से उनकी रुचियों से संबंध में कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं। इसी तरह विभिन्न कार्यों को सफलतापूर्वक संपन्न करने के आधार पर व्यक्तियों की रुचियों का आकलन किया जा सकता है। उपलब्धि परीक्षणों पर छात्रों के द्वारा प्राप्त अंकों या विभिन्न कार्यों की संपादित करने में अर्जित निपुणता आकलित रुचियों का ज्ञान होता है।

रुचि सूचियाँ

रुचियों के औपचारिक मापन के लिए रुचियों का उपयोग किया जाता है। रुचि सूचियों कार्यों आदि के संबंध में सावधानीपूर्वक तैयार की गई तथा विधिवत् मूल्यांकित की गई सूचियाँ होती हैं। जिनकी सहायता से व्यक्ति विधिवत् मूल्यांकित की गई सूचियाँ होती हैं। जिनकी सहायता से व्यक्ति अपनी पसंद-नापसंद को इंगित करता है।

यह दो प्रकार की होती है

- (अ) **निरपेक्ष पसंद-नापसंद:-** इस प्रकार की रुचि सूचियों का क्रिया, व्यवसाय, वस्तु, अध्ययन विषय आदि का संक्षिप्त नामांकन या वर्णन प्रस्तुत किया जाता है। इन में प्रयोज्य की पसंद छान्दने के लिए कहा जाता है।
- (ब) **तुलनात्मक पसंद नापसंद :-** इस प्रकार की सूची में विभिन्न विषय क्रिया वस्तु, आदि को समूह में रखा जाता है। समूह में से व्यक्ति को अपनी पसंद चुननी होती है।

1.5.4 विभिन्न रुचि तथा अभियोग्यता-अनुदेशात्मक रणनीति

छम जानते हैं कि कक्षा में एक साथ विभिन्न रुचियों, अभिक्षमता तथा व्यक्तित्व के छात्रों का समावेश होता है। शिक्षक को एकसाथ सभी छात्रों की तरफ ध्यान देना एक कठिन कार्य है। क्या छात्रों को उनकी क्षमता के आधार पर समूह में बाँटकर शिक्षा देनी चाहिए यह प्रश्न हमेशा शोधार्थी, शिक्षा शास्त्री, मनोवैज्ञानिकों में वाद-विवाद का विषय रहा है।

कक्षा में ही क्षमताओं-रुचि के आधार पर समूह बनाना या क्षमता व रुचि पर आधारित कक्षा बनाने पर विश्वास रखते हैं परंतु कई विशेषज्ञों का कहना है कि इससे छात्रों के (Inferiority Complex) जिससे कमजोर छात्रों में तनाव, एकाग्रता की कमी जैसे लक्षण परिलक्षित हो सकते हैं।

शिक्षक अपनी कक्षा में थोड़ा ध्यान देने पर विभिन्न रुचि-क्षमता वाले छात्रों का प्रबंधन कर सकते हैं।

- शिक्षक द्वारा छात्रों को गुणात्मक पृष्ठपोषण मिलना चाहिए जो छात्र जैसी क्षमता रखता है उसे निवारने के लिए छात्रों को प्रेरित करना आवश्यक है।
- छात्र को कार्य देते समय छात्र की रुचि, क्षमता का ध्यान रखना आवश्यक है।
- शैक्षिक उपलब्धि के साथ-साथ छात्रों के विभिन्न पक्षों का निष्पादन पर भी ध्यान देना चाहिए। जैसे खेल, नृत्य इत्यादि। यह छात्रों के आत्महास्य बढ़ाने में सहायक होते हैं। साथ ही शिक्षक छात्रों को यह समझाये की हर क्षेत्र में उत्कृष्ट होना आवश्यक नहीं है।
- शिक्षक छात्रों के अच्छे कार्य की सराहना करे

- छात्रों के सृजनात्मक कार्य को बढ़ावा दे।
- शिक्षक-अभिभावक छात्रों की क्षमताओं को पहचान कर उनका विकास कर सकते हैं।
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया छात्रों की क्षमताओं के अनुसार होनी चाहिए
- शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को छात्रों की आवश्यकता के अनुसार लचीला बनाना चाहिए।
- शिक्षक, सहशिक्षण, स्व-अध्ययन समूह चर्चा जैसे विधियों का उपयोग कर सकते हैं।

1.5.5 रुचि परीक्षणों का शिक्षा में उपयोग

रुचि व्यक्ति के संपूर्ण व्यक्तित्व की एक अत्यंत महत्वपूर्ण विभा है। किसी कार्य में रुचि होने पर व्यक्ति उस कार्य को सरलता व शीघ्रता से साथ तथा मनोयोग से करता है एवं उसमें असफलता प्राप्त कर लेता है। इसके विपरीत रुचि के अभाव में व्यक्ति कार्य को ठीक ढंग से मन लगाकर नहीं कर पाता है, परिणामतः प्रायः उस कार्य में असफल हो जाता है। इसलिए शैक्षिक तथा व्यावसायिक परामर्श प्रदान करने हेतु रुचियों का ध्यान रखा जाता है। शिक्षा तथा व्यावसायिक क्षेत्रों में रुचियों को महत्वपूर्ण स्थान दिया जाता है। शिक्षाशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक उचित शैक्षिक व व्यावसायिक मार्गदर्शन करने के लिए रुचियों का ज्ञान अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हैं। शैक्षिक तथा व्यावसायिक निर्देशन परामर्श में रुचियों के ज्ञान व महत्व को स्वीकार करने के फलस्वरूप रुचि मापन पर बल दिया जाने लगा है तथा उनके रुचि सूचियाँ बनीय गयी।

1.6 सारांश

- अभिक्षमता व्यक्ति में विद्यामन कोई दशा गुण अथवा गुणों का समूच्चय है। जो किसी ज्ञान, बोध कौशल अथवा उनके समुह की उस सीमा का द्योतक है जिसमें वह व्यक्ति उपयुक्त प्रशिक्षण प्राप्त करने योग्य हो सकेगा।
- अभिक्षमता व्यक्ति के कार्य करने की योग्यता का व्यक्त करती है।
- अभिक्षमता से व्यक्ति की वर्तमान योग्यता के आधार पर भविष्यवाणी की जा सकती हैं।
- अभिक्षमता परीक्षण तीन प्रकार के होते हैं।
 - (1) सामान्य अभिक्षमता परीक्षण
 - (2) भेदक अभिक्षमता परीक्षण
 - (3) विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण
- शैक्षिक तथा व्यवसायिक क्षेत्र में चयन के लिए अभिक्षमता परीक्षणों का उपयोग किया जाता है।
- विभिन्न व्यवसायिक तथा शैक्षिक अभ्यास क्रमों में छात्रों का चयन अभिक्षमता परीक्षण के आधार पर किया जाता है।
- अभिवृत्ति किसी मनोवैज्ञानिक वस्तु से संबंधित धनात्मक अथवा ऋणात्मक भाव है।
- अभिवृत्ति परिस्थिति, योजना, वस्तु या व्यक्ति से संबंधित हो सकती हैं।
- अभिवृत्ति निर्धारण में स्व का अधिक महत्व होता है।
- अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करती है।
- अभिवृत्ति मापन की तीन मुख्य विधियां हैं।

- (1) प्रत्यक्ष विधि
- (2) प्रत्यक्ष अवलोकन
- (3) स्केलिंग मापनिंग

- अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यवहार को दिशा प्रदान करती है।
- किसी भी वस्तु के प्रति बनी हुई समस्त धारणाओं, विश्वासों, आदर्शों और अभिप्रेरणाओं का संबंध अभिवृत्ति से होता है।
- घर तथा स्कूल में हमेशा यह कोशिश होनी चाहिए कि बालकों में अनुकूल अभिवृत्ति विकसित हो।
- शिक्षा में अभिवृत्ति का उपयोग कर बालक के व्यवहार को दिशा प्रदान की जा सकती है।
- रुचि किसी वस्तु, व्यक्ति, तथ्य प्रतिक्रिया आदि को पसंद करने अथवा उसके प्रति आकर्षित होने की प्रवृत्ति है।
- रुचि अभिक्षमता का लाक्षणिक रूप होता है।
- रुचियां जन्मजात भी होता है और अर्जित भी।
- रुचि मापन हेतु प्रश्नवाली, अवलोकन, साक्षात्कार तथा रुचि सूचियों का उपयोग किया जाता है।
- शिक्षाशास्त्री तथा मनोवैज्ञानिक उचित शैक्षिक एवं व्यवसायिक मार्ग दर्शन करने के लिए रुचियों का ज्ञान महत्वपूर्ण मानते हैं।

1.7 अपनी प्रगति जाँचियें-

- अभियोग्यता की परिभाषा देते हुए उसकी प्रकृति को समझाइये।
- अभिक्षमता मापन की किन्हीं दो विधियों के नाम बताइये।
- अभिक्षमता का शिक्षा में उपयोग कैसे किया जाता है।

- अभिवृत्ति का शिक्षा में उपयोग कैसे किया जाता है।
- अभिवृत्ति की परिभाषा देते हुए उसकी प्रकृति को समझाइये।
- अभिवृत्ति मापन की किसी एक विधि को समझाइये।
- एक शिक्षक अपनी छात्रों की अभिवृत्ति में कैसे परिवर्तन कर सकता है।
- अभिवृत्ति परीक्षण का शिक्षा में उपयोग क्या है ?
- रुचि से आप क्या समझते हैं।
- रुचि परीक्षण कितने प्रकार के होते हैं।
- रुचि परीक्षण का शिक्षा में क्या उपयोग है।

Reference

- Aggarwal, J.C. Essential of Educational Pyschology, Delhi, 1998
- Chauhan, S.S. Advanced Educational Pyschology, Vikash Publishing New Delhi, 1996.
- Dandapani, S., Advanced Educational Psychology, New Delhi, Anmol Publication Pvt. Ltd., 2000.
- Mangal S.K., Advanced Educational Pyschology, Prentice Hall of India Pvt. Ltd., 1999.
- Mathur, S.S., Educational Psychology, Vinod Pustak Mandir, Agra.
- Gupta, S.P., Uchchatar Siksha Manovigyan Sharda Publishers, Allahabad.